Certificate of Publication

is awarded to

डॉ आभा सिंह

for the paper titled

शिक्षक शिक्षा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

Published in *Nibandha Mala* Journal Vol-12, Issue-01 January- 2020 ISSN: 2277-2359

International Refereed and Indexed Journal for Research Publication

With Impact Factor 5.1 UGC Care Listed

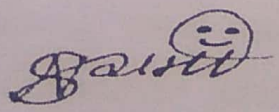

S.N. Sharma

Editor-in-Chief

editor@hindijournals.org

UGC

University Grants Commission

EDUINDEX

Scanned by CamScanner

Nibandha Mala (Bimonthly Hindi Journal)

ISSN 2277-2359
Vol-12-Issue-01
January- 2020

शिक्षक-शिक्षा में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

डॉ सरोज राय[1], डॉ आभा सिंह[1]

[1]*सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं-राजस्थान।*

सारांश

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) वर्ष 2009 में भारत के शिक्षा का अधिकार अधिनियम के अन्तर्गत अनिवार्य मूल्यांकन प्रक्रिया है। सतत् व्यापक मूल्यांकन विद्यालय आधारित मूल्यांकन की प्रक्रिया है जिसमें विकास के सभी पहलुओं को समाहित किया गया है। जो शिक्षा के दोहरे उद्देश्यों पर बल देती है। अर्थात् विविधता पूर्वक अधिगम मूल्यांकन एवं आकलन में निरन्तरता तथा व्यवहार परिणाम। ऐसे में एक शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन के दौरान विद्यार्थी शिक्षकों में उच्च स्तर के चिन्तन कौशल विकसित करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा विद्यार्थी शिक्षकों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन करना आवश्यक है। इस प्रकार के सतत् तथा व्यापक मूल्यांकन भारत के स्कूलों में मूल्यांकन के लिए लागू की गयी एक नीति है। जिसे 2002 में आरम्भ किया गया था। इसकी आवश्यकता शिक्षा के अधिकार के परिप्रेक्ष्य में आवश्यक हो गया। यह मूल्यांकन प्रक्रिया राज्य सरकारों के परीक्षा बोर्डो तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा शुरू की गयी है।

भारत सरकार ने अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) रेग्यूलेशन 2014 के आधार पर सतत् व्यापक मूल्यांकन की जवाबदेही सुनिश्चित की जा सकती है तथा सफलतापूर्वक इसकी क्रियान्विति भी की जा सकती है। जिसमें सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि शिक्षक-शिक्षा में गुणवत्ता लाने का प्रभावी उपकरण तभी सशक्त होगा जब संस्थान के प्रत्येक सदस्य, प्रशासक/ प्रबन्धक, शिक्षक प्रशिक्षक, तथा सरकार अपनी भूमिका शिक्षण-अधिगम संसाधनों का विकास विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, सम्प्रेषण कौशल, समय प्रबन्धन अधिगम से जोड़ने की क्षमता, शिक्षण की समग्रता, रूचियों अभिवृतियों का मूल्यांकन, स्वस्थ गतिविधियों का चयन कक्षा-कक्ष में विकसित सामग्री, स्वयं की धारणा एवं सोच का विकास करते हुए कुशल योग्य मानवता से भरपूर शिक्षक तैयार कर सके जो

Copyright©authors

Scanned by CamScanner